आशिक माशूक

प्यारे सुन्दरसाथ जी-संसार के लगभग सभी ग्रन्थों में आशिक-माशूक के विषय में अटकलों से लिखने का प्रयास तो किया गया है परन्तु जब तक स्वयं पारब्रह्म ने इस २८ वें कलयुग में आकर इस के भीतर छिपे मर्म को नहीं खोला तब तक कोई भी निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सका। वेदों में कहा गया 'जो तू है, वह मैं हो जांऊ-जो मै हूं-वह तू हो जाये' हिन्दु धर्म आत्मा चः परमात्मा के सिद्धान्त पर आधारित तो है परन्तु आत्मा का घर कहा है परमात्मा का स्वरूप तथा उसकी लीला क्या है- इस विषय में हिन्दुओं के लगभग सभी ग्रन्थ मौन हैं। बाईबल की Old Testament नामक पुस्तक में आत्मा को 'बधू' तथा परमात्मा को उस का 'स्वरूपन' कहा गया है।

विश्व में कुरान पक्ष को मानने वाले अधिकतर लोग आशिक माशूक की ही बातें किया करते है। आशिक-माशूक के भीतर छिपे हुए मर्म को समझे बिना ही ये लोग अपने आप को माशूक तथा अल्ला को आशिक कहते हैं। इन्ही में एक वर्ग जो सूफी कहलाता है आशिक-माशूक को जोड़ने वाली अनमोल वस्तु इश्क का मोल भले ही नहीं जानता, परन्तु स्वयं को अल्ला का माशूक मानकर शरीयत के बन्धनों से तो बचा रहता है।

इन्द्रावती में पांचों शक्तियों के समागम के पश्चात, कुलजम स्वरूप की कुंजी से, कुरान-पुराण तथा बाईबल में वर्णित आशिक-माशूक के जब भेद खुले, तो इश्क तथा आशिक-माशूक को चौदह तबक के ब्रह्माण्ड से परे की वस्तु मानकर इस का असल स्वरूप उजागर किया गया। इश्क-रबद को कारण बनाकर परमधाम की मारफत-खिलवत तथा वाहेदत्त की लीला से जुड़ी हुई आत्माएं जब यहां आई तो आशिक-माशूक का निपटारा यहां धनी ने स्वयं किया। क्योंकि परमधाम में इश्क ही इश्क के माहौल में आशिक कौन है माशूक कौन है, ये दोनों एक हैं कि दो है जैसे गम्भीर उलझे हुए विषय को कदापि सुलझाया नहीं जा सकता था। तो सुन्दरसाथ जी अक्षरातीत के हुकम से बना अक्षर का खेल रूहों को दिखलाकर धनी ने अपनी ही अंग रूहों को यह बतलाया कि जिस प्रकार जीवों के परमात्मा आदि नारायण एक से असंख्य बनकर अन्त में एक ही बचते हैं अक्षर ब्रह्म अक्षरधाम में एक हैं अक्षरधाम में जो कुछ भी है अक्षर ब्रह्म के नूर से उत्पन्न है उसी प्रकार परमधाम में भी एक ही अक्षरातीत है। राज जी की आनन्द अंग श्यामा जी तथा १२००० रूहें एक दिल होने के कारण एक हैं। राज जी तथा रूहों में आशिक कौन माशूक कौन का बेवरा करना उतना ही कठिन है जितना कि सागर से उस की लहर को जुदाकर के दिखलाना। क्योंकि लहरें तो बनती ही सागर के भीतर से हैं इसलिए इन्हें अलग करके नहीं देखा जा सकता।

'परदा आड़ा मासूक, आसिक करे न कोय।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होय।।'

आत्माएं अक्षरातीत के तन हैं केवल लीला के लिए ये दो हैं वरना एक ही हैं। यहीं नहीं अक्षरातीत के अतिरिक्त और कोई है ही नहीं १४ तबक के ब्रह्माण्ड का विस्तार भी अनादि अक्षरातीत से है इसलिए केवल वहीं एक हैं बस और कोई नहीं। अक्षरातीत जहां रहते हैं वहां का एक-एक कण अक्षरातीत का स्वरूप है। श्यामा जी सखियां-वन-पर्वत-पशु-पक्षी सभी राज जी के स्वरूप हैं। अक्षरातीत के भीतर ही आनन्द है भीतर ही इश्क है इसीलिए सारा परमधाम इश्क तथा आनन्द से ओत-प्रोत है लीला के लिए श्यामा जी १२००० रूहें

Nijanand App

तथा सारा परमधाम इश्क से सराबोर है जहां आनन्द की लीला निरन्तर होती रहती है। परन्तु आदि नारायण मोहतत्व की उपज है इसलिए उन की समस्त सृष्टि में दुख ही दुख है।

परमधाम की लीला को स्वलीलाद्वैत कहा जाता है परन्तु आशिक-माशूक का बेवरा किये बिना स्वलीलाद्वैत की बात समझ में नहीं आती। सपने के ब्रह्माण्ड में विष्णु-लक्ष्मी एक अंग होते हुए भी दो हैं परन्तु परमधाम में श्यामा जी सखियां तथा पच्चीस पक्ष भी एक हैं। सारा परमधाम अद्वैत है एक इश्क, एक तन, एक मन, एक भाषा तथा चलन भी एक है 'वाहेदत कहिए इन को तन मन एक इसक' श्री राज जी के तन को यहां खेल में कहा गया है 'सच्चिदानन्द'। अर्थात सत चिद आनन्द जिसके भीतर राज जी श्यामा जी सखियां तथा अक्षर भी कहे गये हैं। यही नहीं सारा परमधाम ही अक्षरातीत के भीतर है फिर भी अक्षरातीत परमधाम में रहते हैं।

जिस प्रकार सागर का स्वरूप उस की लहरों से जाना जाता है सागर का पानी मीठा है अथवा खारा लहरों के बिना कैसे जाना जा सकता है उसी प्रकार अक्षरातीत की लीला का स्वरूप, जो कि श्यामा जी तथा सखियां हैं, इन से अक्षरातीत को जाना जा सकता है। राज जी के दिल में इश्क है दिल में ही आनन्द है यह इश्क तथा आनन्द परमधाम के जर्रे-जर्रे में राज जी के दिल से ही समाया है इसी लिए वहां के एक एक कण से इश्क तथा आनन्द ही मिलेगा। राज जी के भीतर ही सारे रस समाये हैं परन्तु इन रसों का स्वाद उनके आनन्द अंग से ही प्राप्त होगा।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि आशिक तथा माशूक के मध्य कोई विभाजन रेखा खींची ही नहीं जा सकती आशिक का दावा लेने वाली रूहें यदि अपने धनी की साहेबी जानती तो स्वयं को आशिक तथा अपने धनी को माशूक कभी न कहती। आशिक माशूक तो मात्र शब्द हैं जो केवल आत्मा तथा परमात्मा के परस्पर सम्बन्ध का संकेत देने के लिए कहे गये हैं।

'जो खेल में खबर न हक की, तो निसबत खबर क्यों होए।
हक आशिक निराबत माशूक, वाहेदत्त में न दोए।।'

इन्द्रावती जी कहती है कि हे सुन्दरसाथ जी जब तक मैंने अपने धनी को अपने से जुदा जाना तब तक तो मैं उन्हें स्वप्न के ग्रन्थों में खोजती रही परन्तु जब धनी ने स्वयं मेरे हृदय के भीतर विराजमान होकर कहा कि तुम मेरी अंगना हो और मैं अंगना का माशूक हूं तो पता चला कि जब धनी और मैं दो नहीं हैं तो आशिक माशूक दो कैसे हो सकते हैं। लहरों से ही जी चलता है कि सागर है इसीलिए इन्द्रावती के दिल में जब स्वयं हकीसूरत श्री प्राणनाथ विराजमान हुए तो हकीकत की लीला हुई जिस से पता चला कि आशिक तथा माशूक तो केवल लीला के लिए ही हैं।

'आतम चाहे बरनन करू, जुगल किसोर बिध दोए।
ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोय।।'

तो सुन्दरसाथ जी जैसे सागर की लहर सागर के भीतर रहते हुए सागर की अथाह गहराई तथा उसकी विशालता का अनुमान नहीं लगा सकती जैसे नमक का ढेला जो सागर के पानी से बना है उसे सागर में डाल देने से तो वह सागर के समरूप हो जायेगा इसी प्रकार रूहें जो अक्षरातीत के तन हैं परमधाम में इश्क के माहौल में रहते हुए कैसे जान सकती थी कि मारफत का स्वरूप क्या है, खिलवत-वाहेदत क्या है? हकीकत के धरातल पर जब राज जी श्यामा जी तथा रूहों को अलग-अलग देखा तो पता चला कि आशिक-माशूक तो एक ही हैं जब ये दो हैं ही नहीं तो यही कहना उचित होगा कि इश्क रबद को कारण बताकर राज जी ने अपनी निसबत

Nijanand App

की पहचान हमें यहां करवाई।

अक्षरातीत का यथार्थ स्वरूप ही मारफत का स्वरूप है सागर की लहरें यदि उमड़ें नहीं तो इस का यह अर्थ नहीं कि लीला का प्रवाह रूक गया है। लहरों तो हैं परन्तु सागर के भीतर सिमटी पड़ी हैं। उदाहरण के लिए यदि सखियां राज जी के स्वरूप तथा सिनगार में इस कदर डूब जायें कि उन्हें अनुभव ही न हो कि सिनगार कैसा है मुखारबिन्द की शोभा क्या है परमधाम में वाहेदत की मारफत का स्वरूप यही है खिलवत के धरातल पर लीला का रस अनुभव होता है। परन्तु आशिक तथा माशूक की व्याख्या केवल हकीकत के धरातल पर होती है। उदाहरण के लिए रंग परवाली मन्दिर में सखियों के अपने शयन के मन्दिर में जाने तक ऐसा अनुभव होता है कि राज जी तो श्यामा जी के पास रह गये। परन्तु जैसे ही अपने अपने मन्दिर में सखियां पहुंचती हैं राज जी सेज्या पर पहले से ही विराज मान होते हैं।

तो प्यारे सुन्दरसाथ जी जिस प्रकार सूरज के उगने पर इस धरती का अंधेरा से अंधेरा कोना भी रोशन हो जाता है उसी प्रकार स्वयं श्री प्राणनाथ जब मारफत का सूरज बन कर निकले तो अज्ञानता का समस्त अंधकार स्वयं ही भाग गया क्योंकि चौदह तबक का न्याय करके सारी सृष्टि को अखंड करना था। परमधाम के कदीम से चल रहे इश्क के विवाद का निपटारा करना था ब्रह्म सृष्टि जो चौदह तबक के ब्रह्माण्ड को मुक्ति देने वाली है उसे प्रत्येक संशय से मुक्त करना था इसी लिए स्वयं काजी बनकर आये तो आशिक-माशूक का निपटारा भी कर दिया।

सर्वप्रथम रसूल के रूप में स्वयं राज जी आये परन्तु स्वयं को माशूक कहा अर्थात महमंद के रूप में तो खुद राज जी माशूक थे वह इसलिए क्योंकि हकीसूरत के बिना आशिक-माशूक का बेवरा हो नहीं सकता था। इसलिए रसूल के रूप में पहले स्वयं को ही माशूक कहा अन्त में जब स्वयं राज जी हकीसूरत के रूप में जाहेर हुए तो सब कुछ खुद ही जाहेर कर दिया। और कहा कि यद्यपि मैं पहले भी आया था परन्तु मैंने अपने आप को माशूक कहा अब मैं हकीसूरत के रूप में आशिक बन कर यह बताने आया हूं कि आशिक भी मैं हूं माशूक भी मैं हूं आशिक-माशूक मेरे ही दो रूप हैं।

'अल्ला आसिक, मासूक महमंद, इसक दीजे हम।
हम आसिक नामधरायके, मासूक करे हैं तुम।।'

काजी के भेष में धनी ने इस संसार में आकर अर्श का सारा खजाना अपनी रूहों पर लुटा दिया। आठों सागरों का रस इन्द्रावती के दिल में डालकर अपने मोमिनों को मेहर की पहचान करवाई क्योंकि मेहर का सागर ही एक ऐसा सागर है जिस से धनी के पूर्ण स्वरूप की पहचान होती है। इस सागर के भीतर ही इश्क है, निसबत है, वाहेदत है, मारफत है, खिलवत है, हकीकत है। स्वयं को जाहिर करने का माध्यम अपनी रूहों को बनाकर अपने आशिक होने की बात को चौदह तबक में तो जाहेर किया ही तथा यह भी कहा कि आशिक और माशूक तो आत्मा तथा परमात्मा को नाम दिये गये है केवल इस संसार को बताने के लिए। हम और तुम तो लीला के लिए है वरना न तो 'तुम-तुम' थे न मैं-मैं हूं। तुम मुझ में, मैं तुझ में इस कदर समाये हैं कि न तो हम दो है और न ही एक हैं।

'आशिक माशूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए।
दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए।।'

सनंध ३६/५१

सुन्दरसाथ
कान्ता भगत,

Nijanand App